डीआरआई के प्रयास से बढ़ा पशुपालन

दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के आरोग्यधाम परिसर में 1995 में गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र आरंभ किया था। 1998 में जयप्रभा ग्राम में तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा भारतीय गोवंश के उन्नयन का शुभारम्भ साहीवाल नस्ल के सॉड वितरण से किया गया। तभी से गोवंश के संरक्षण, संवर्धन, विकास का काम निरन्तर चल रहा है।

पशुपालन के लिए चित्रकूट अंचल में कई तरह के प्रयास किए गए। सतना जिले के बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड क्षेत्र में पशुधन की संज़्या सामान्य से अधिक है, किन्तु दुग्ध उत्पादकता का औसत सामान्य से बहुत कम है। गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र चित्रकूट ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवॉ के सहयोग से गुणवज़ायुक्त हरे चारे का उत्पादन एवं उपयोगिता का प्रयोग पालदेव गांव में पांच पशुपालकों के घर पर किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. रामप्रकाश शर्मा के अनुसार प्रत्येक पशुपालक को 10-10 प्लास्टिक की टोकरी उपलज़्ध कराई गई, जिनमें घर पर उपलज़्ध दाने (गेहूँ, जौ, मज़्का आदि) को 24 घंटे पानी में भिगाने के बाद बोया गया। दस दिनों के उपरान्त वह 6 इंच